दिशाएं

नोट – तुमने अपनी प्राथमिक शाला में दिशाओं के बारे में पढ़ा होगा। भूगोल पढ़ने के लिए दिशाओं का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। इसलिए हम अपनी याद ताज़ा करने के लिए कुछ अभ्यास करेंगे।

दिशा परिचय

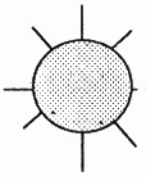

तुम्हें चारों दिशाओं के नाम तो याद होंगे।

पूरब, ———, ——— और ——— ।

तुम यह भी जानते होगे कि सूरज ——— दिशा से उगता है, और ——— दिशा में डूबता है।

सूरज जहाँ से उगता है उस तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ। अब तुम्हारे सामने की तरफ ——— दिशा होगी और पीछे की तरफ ——— दिशा होगी।

तुम्हारे सीधे हाथ की तरफ दक्षिण दिशा और उल्टे हाथ की तरफ उत्तर दिशा होगी।

उत्तर की ओर मुंह करो तुम अपने बायें (उल्टे) हाथ की तरफ मुड़ो। अब तुम उत्तर दिशा की ओर मुंह कर के खड़े हो (जैसे चित्र में दिख रहा है)।

अब तुम्हारा दायां (सीधा) हाथ ——— और उल्टा (बायां) हाथ ——— दिशा की ओर है और तुम्हारी पीठ की ओर ——— दिशा है।

चारों दिशाएं तुम इस चित्र के किनारों पर सही जगह भरो।

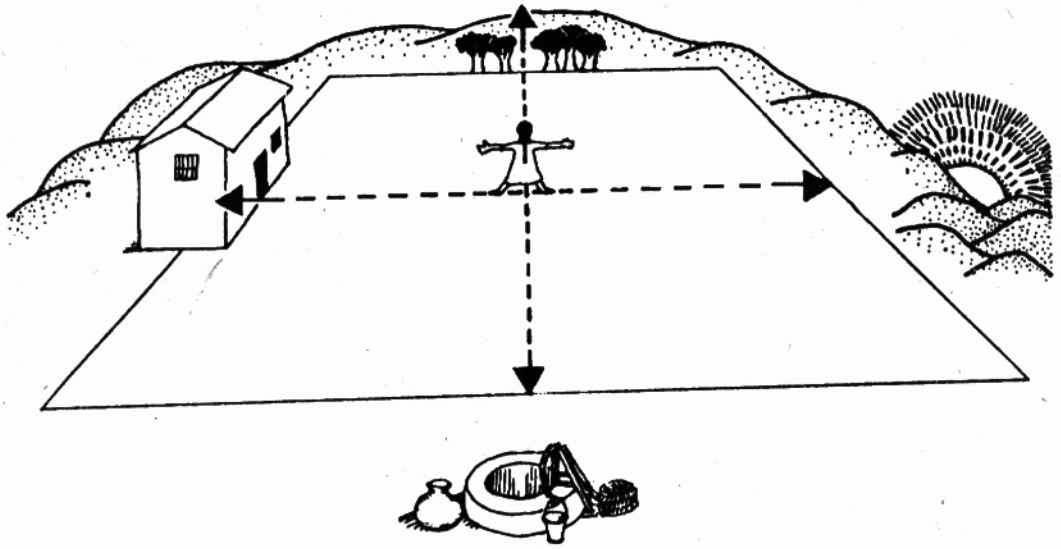

"किस दिशा में जाऊं?"

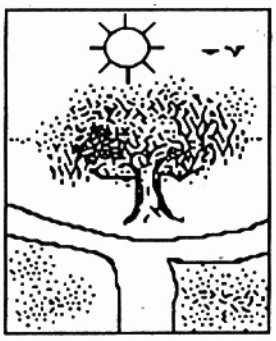

गुल्लू एक दिन सुबह-सुबह पलासनेर गांव के लिए निकला। उसे किसी ने बताया कि सड़क से सीधे जाओ। एक घंटा चलने के बाद एक बरगद का पेड़ मिलेगा। वहां दो सड़कें दिखेंगी। तुम उत्तर की ओर जाने वाली सड़क पर जाना।

गुल्लू बरगद तक तो पहुंच गया। उसके सामने दो रास्ते भी दिख गये। दोनों अलग-अलग दिशाओं में जा रहे हैं। गुल्लू को समझ में नहीं आ रहा था इनमें से उत्तर की ओर जाने वाली सड़क कौन सी है।

अगर तुम गुल्लू की जगह होते तो कैसे पता करते?

तुम्हारी शाला के चारों ओर

तुम दिक्सूचक से भी उत्तर दिशा पता कर सकते हो। एक दिक्सूचक लेकर शाला के बाहर जाओ और चारों दिशाएं पहचानो। तुम शाला के बाहर चारों ओर घूमकर देखो – हर दिशा में क्या-क्या है? पहले दिक्सूचक की मदद से देखो कि शाला के उत्तर में क्या है?

दक्षिण में क्या है?

पूरब में क्या है?

पश्चिम में क्या है?

दिक्सूचक

दिशा का खेल

दौलत पांचवीं कक्षा में पढ़ता है। उसके गुरुजी ने बच्चों को दिशा का अभ्यास कराने के लिए एक खेल खिलवाया। उन्होंने बच्चों को जैसे चित्र में दिखाया गया है, वैसे खड़े किया। उन्होंने कहा, "उत्तरा, उत्तर की ओर मुंह करके खड़ी है। बाकी बच्चे किन दिशाओं की ओर मुंह करके खड़े हैं?"

उत्तरा से सिद्दीका तक –

पूरा से जोधा तक –

चुन्नू से हरि तक –

धीरू से दौलत तक –

खेल को आगे बढ़ाओ

सिद्दीका के दक्षिण में कौन खड़ा है?

धीरू के उत्तर में कौन खड़ा है?

चुन्नू के पूर्व में कौन खड़ा है?

पूरा के पश्चिम में कौन खड़ा है?

मीरा के दक्षिण में कितने बच्चे खड़े हैं?

लक्ष्मन के दक्षिण में कितने बच्चे खड़े हैं?

पूरा के पश्चिम में कौन-कौन खड़ा है नाम बताओ।

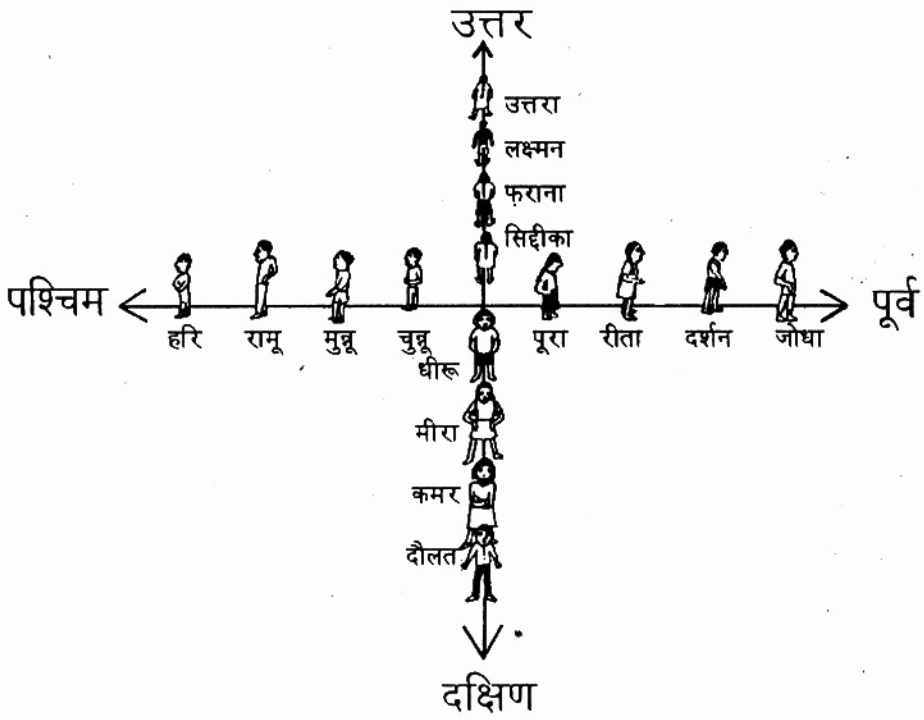

मानचित्र में दिशा

इस पुस्तक में तुम कई मानचित्र देखोगे। इनमें कई गांव, शहर, नदी, पहाड़, देश, समुद्र, होंगे। ऐसे मानचित्रों में दिशाएं कैसे पता करें? कैसे पता करें कि कोई जगह पूरब में है कि पश्चिम में, उत्तर में है कि दक्षिण में?

मानचित्रों को इस प्रकार बनाते हैं कि हमेशा उत्तर दिशा ऊपर के हाशिये या किनारे की ओर होती है।

तुमने देखा कि जब धरती पर उत्तर दिशा तुम्हारे सामने होती है, तब दाहिने हाथ पर पूर्व दिशा और बाएं हाथ पर पश्चिम दिशा होती है। यही बात मानचित्र पर भी लागू होती है। मानचित्र को जब तुम अपने सामने रखते हो या सामने टांगते हो, तो मानचित्र में उत्तर दिशा तुम्हारे सामने होती है। मानचित्र पर भी पूर्व दिशा दाहिने और पश्चिम दिशा बाएं हाथ पर होती है। दक्षिण दिशा निचले हाशिये या किनारे की ओर होती है।

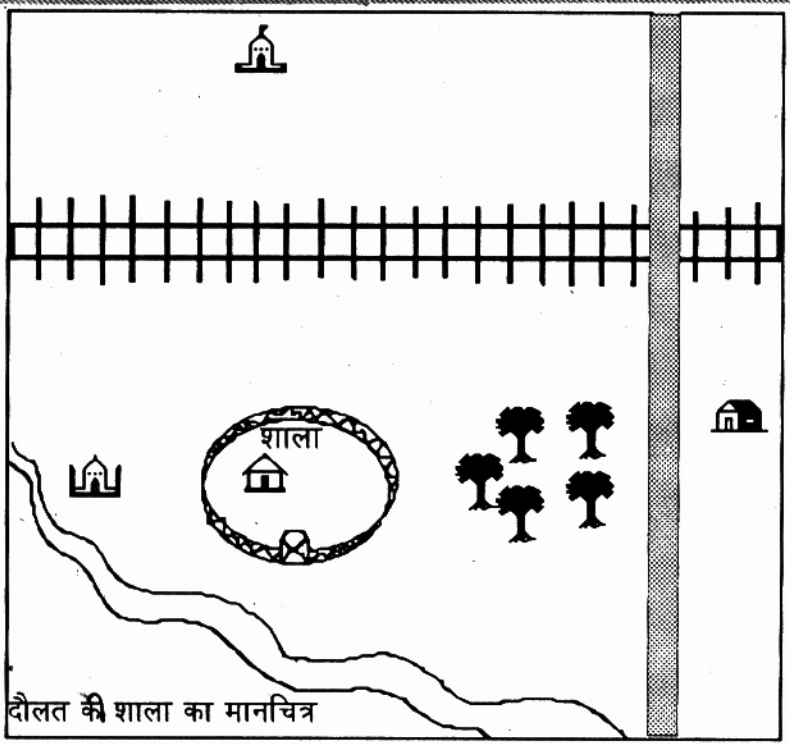

दौलत की शाला का मानचित्र

दौलत की शाला का मानचित्र

दौलत के गुरुजी ने शाला और आसपास का नक्शा श्यामपट पर बनाया।

क्या तुम बता सकते हो कि शाला की किस दिशा में रेल लाईन है?

शाला की किस दिशा में पेड़ हैं?

शाला की किस दिशा में दौलत का घर है?

शाला की किस दिशा में मस्जिद बनी है?

मानचित्र में कोई जगह किस दिशा में है, यह पता करने का एक आसान तरीका है। चलो इस तरीके के बारे में जानें।

दिशा तीर बनाओ

एक पुरानी कापी या किताब का कवर लो। कवर पर पेन से दिशा के तीर ऐसे बनाओ जैसा चित्र में दिखाया है। चारों दिशाओं के नाम भी सही जगह पर लिख लो।

तुमने जो चित्र बनाया उसे सावधानी से काटकर अलग कर लो। सभी बच्चे अपना अलग दिशा तीर बना लें।

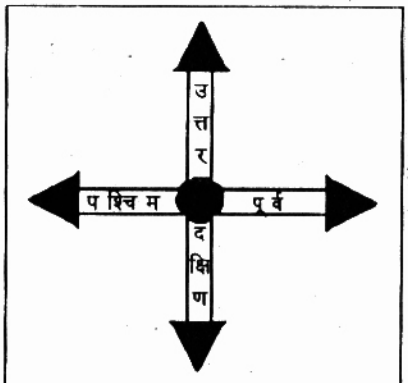

दिशा तीर

दिशा बताओ

किसी भी जगह की किस दिशा में क्या है, यह जानने के लिए अपने दिशा तीर को उस जगह पर रखो।

अगर यह पता करना है कि शाला की किस दिशा में मस्जिद है, दिशा तीर को शाला के ऊपर रखो। तीर के बीच में जो गोला है वह शाला के ठीक ऊपर होना चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि जिस तीर पर "उत्तर" लिखा है, वह नक्शे के ऊपरी हाशिये या किनारे

की ओर होना चाहिए। अब देखो कौन सा तीर मस्जिद की ओर है। वही मस्जिद की दिशा है।

अब तुम दिशा तीर निम्नलिखित जगहों पर रखो और उत्तर दो।

दौलत के **घर** की किस दिशा में सड़क है?

मस्जिद की किस दिशा में नदी है?

नदी की किस दिशा में मस्जिद है?

मंदिर के दक्षिण में क्या है?

पेड़ों के पश्चिम में क्या-क्या है?

तुम बनाओ

दौलत की शाला के पूर्व में, मगर बागुड़ के पश्चिम में एक पेड़ बनाओ।

मंदिर के दक्षिण में, मगर रेल लाईन के उत्तर में एक पेड़ बनाओ।

एक गुत्थी सुलझाओ

दौलत अपने घर पर पड़े बहुत पुराने कागज़ों को देख रहा था। उसे अचानक एक पुराना कागज़ मिला जिसमें एक छिपाये गये खज़ाने का राज़ लिखा था। कागज़ में ऐसा लिखा था।

"मैं ठाकुर गब्बरसिंह ने अपने सारे हीरे और सोने के ज़ेवरात एक टापू के बीच, मंदिर में गाड़े हैं। सब गहने एक लोहे की पेटी में हैं, जिसके दो ताले हैं। हरेक ताले की चाबी अलग-अलग गांव में छिपी है। उन्हें ढूंढने और उस टापू तक पहुंचने का रास्ता इस प्रकार है।

"हासिलपुर के उत्तर की ओर जाने वाली सड़क पर चलने पर बनस नदी आयेगी। इस नदी को पार करने पर सड़क के पूर्व में ईनामगांव मिलेगा। ईनामगांव के दक्षिण में एक बरगद का पेड़ है जिसके छेद में एक डिब्बे में पहली चाबी है।

"ईनामगांव से फिर से सड़क पर उत्तर की ओर जाने पर एक तिगड्डा मिलेगा। वहां पश्चिम दिशा में मुड़ना है। पश्चिम दिशा में कुछ देर चलने पर बनस नदी फिर मिलेगी। बनस नदी के पश्चिम में और सड़क के उत्तर में एक गांव है - त्रिपुरी। इस गांव के पूर्व में एक पत्थर है जिसके नीचे दूसरी चाबी मिलेगी।

"त्रिपुरी से सड़क पर ही पश्चिम में और आगे चलने पर एक घना जंगल आयेगा। जंगल के पहले से उत्तर की ओर मुड़कर सीधे चलना चाहिए। सड़क के अंत में तालाब का किनारा आयेगा। वहां से तालाब के बीच में टापू पर जाने पर झुरमुट के बीच में एक मंदिर दिखेगा। मंदिर की दीवार के पास एक पत्थर होगा। उस पत्थर को हटाने पर एक सुरंग दिखेगी जिसके अंदर वह ज़ेवर भरा बक्सा मिलेगा।

इस लेख के साथ एक और कागज़ पर एक नक्शा बना था। नक्शे में हासिलपुर का नाम था। दूसरे गांव बने ज़रूर थे, मगर उनके नाम नहीं थे।

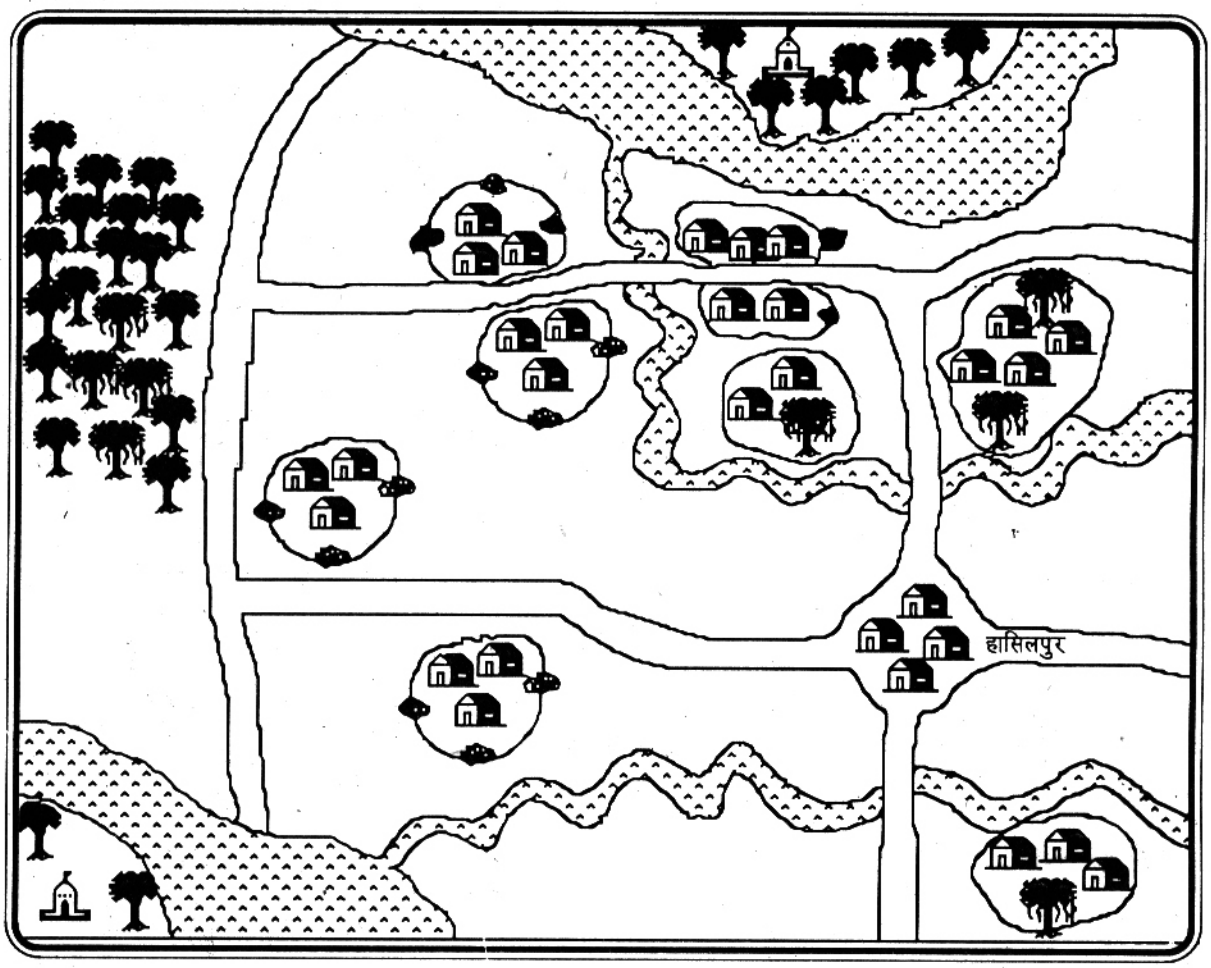

तुम तीर बनाकर बताओ, दौलत किस रास्ते से गया होगा?

ईनामगांव और त्रिपुरी को पहचानो और नक्शे पर उनका नाम लिखो।

जहां-जहां चाबी मिली वहां × का निशान लगाओ।

जहाँ ज़ेवर मिले वहां 0 का निशान लगाओ।